



THE SCHOLARLY FORESIGHT

Volume-01, Issue-01, Month -September, Year -2026

Website - <https://scholarlyforesight.com/>

भारत में जनजातीय विरासत के संरक्षण में एन. सी . सी और एन . एस . एस की भूमिका: एक अनुभवात्मक अध्ययन

प्रदीप कुमार यादव (शोधार्थी)

शिक्षाशास्त्र विभाग, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज, प्रयागराज

Email: pk9451@gmail.com

Received-09 /08/2026

Accepted-24/08/2026

Published-01/09/2026

सारांश

भारत विश्व की सर्वाधिक जनजातीय विविधता वाले राष्ट्रों में से एक है, जहाँ 2011 की जनगणना के अनुसार अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या कुल जनसंख्या का लगभग 8.6 प्रतिशत (लगभग 10.4 करोड़) है तथा 705 से अधिक जनजातीय समूह अधिसूचित हैं (Ministry of Tribal Affairs, n.d.; National Cadet Corps (India), n.d.)। वैश्वीकरण, शहरीकरण एवं आधुनिकीकरण के दबाव में जनजातीय भाषाओं, लोकनृत्यों, हस्तशिल्प एवं मौखिक परंपराओं के क्षरण की आशंका निरंतर बनी हुई है। ऐसे परिदृश्य में राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन. सी . सी) और राष्ट्रीय सेवा योजना (एन . एस . एस) जैसे युवा-केंद्रित संगठन, जो राष्ट्रीय एकता शिविरों, विशेष राष्ट्रीय एकीकरण शिविरों (SNIC) एवं "एक भारत श्रेष्ठ भारत" जैसी पहलों के माध्यम से सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करते हैं, जनजातीय विरासत के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। प्रस्तुत अध्ययन एक अनुभवात्मक (empirical) सर्वेक्षण के माध्यम से पाँच जनजातीय-बहुल राज्यों — झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, मध्य प्रदेश तथा राजस्थान के 300 एन. सी . सी एवं एन . एस . एस कैडेटों/स्वयंसेवकों (150+150) के दृष्टिकोणों का विश्लेषण करता है। अध्ययन में संरचित प्रश्नावली, द्वितीयक आंकड़ों तथा वर्णनात्मक सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है। परिणाम दर्शाते हैं कि उत्तरदाताओं में जागरूकता का स्तर मिश्रित है (उच्च 41%, मध्यम 39%, निम्न 20%), एन. सी . सी कैडेट लोकनृत्य कार्यशालाओं व पारंपरिक खेलों में तथा एन . एस . एस स्वयंसेवक हस्तशिल्प प्रदर्शनियों में अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय पाए गए, तथा वर्ष 2018 से 2024 के मध्य जनजातीय विरासत केंद्रित शिविरों की संख्या में सतत वृद्धि दर्ज की गई है।

अध्ययन के निष्कर्ष जनजातीय भाषा-दस्तावेजीकरण को सुदृढ़ करने, डिजिटल संग्रहण तथा जनजातीय समुदायों के साथ प्रत्यक्ष सहभागिता बढ़ाने की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।

Keywords: एन. सी . सी, एन . एस . एस, जनजातीय विरासत, सांस्कृतिक संरक्षण, युवा भागीदारी, अनुभवात्मक अध्ययन

1. प्रस्तावना

भारत की सांस्कृतिक पहचान उसकी बहुलवादी एवं विविधतापूर्ण परंपराओं में निहित है, जिसमें जनजातीय समुदायों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत की जनगणना 2011 के अनुसार देश में अनुसूचित जनजाति (Scheduled Tribes) की जनसंख्या कुल जनसंख्या का लगभग 8.6 प्रतिशत है, जो लगभग 10.4 करोड़ के बराबर है, तथा वर्तमान में 705 जातीय समूहों को अनुसूचित जनजाति के रूप में अधिसूचित किया गया है। मध्य प्रदेश में सर्वाधिक जनजातीय जनसंख्या (लगभग 14.7 प्रतिशत हिस्सेदारी) निवास करती है (Ministry of Tribal Affairs, n.d.)। ये समुदाय अपने साथ समृद्ध लोकनृत्य, हस्तशिल्प, मौखिक साहित्य, बोलियाँ, वाद्ययंत्र तथा पारंपरिक ज्ञान-प्रणालियाँ लेकर चलते हैं, जो भारत की सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग हैं। किंतु तीव्र शहरीकरण, आधुनिक शिक्षा-प्रणाली का एकरूपीकरण प्रभाव, आजीविका हेतु पलायन तथा डिजिटल मीडिया के वर्चस्व के चलते अनेक जनजातीय भाषाएँ एवं परंपराएँ क्षरण के कगार पर हैं। ऐसी स्थिति में युवा शक्ति को इस विरासत से जोड़े रखना तथा अंतर-सांस्कृतिक संवाद को प्रोत्साहित करना एक राष्ट्रीय आवश्यकता बन गई है।

राष्ट्रीय कैडेट कोर (National Cadet Corps – एन. सी . सी) तथा राष्ट्रीय सेवा योजना (National Service Scheme – एन . एस . एस) भारत के दो सबसे बड़े युवा संगठन हैं। एन . एस . एस की स्थापना 24 सितंबर 1969 को महात्मा गांधी की जन्म-शताब्दी के अवसर पर 37 विश्वविद्यालयों तथा 40,000 विद्यार्थियों के साथ युवा एवं खेल मंत्रालय के अंतर्गत हुई थी, जिसका आदर्श वाक्य "Not Me But You" (स्वयं से पहले समाज) है (National Service Scheme, n.d.; National Service Scheme, Government of India, n.d.)। दूसरी ओर, एन. सी . सी कैडेटों में अनुशासन, नेतृत्व एवं राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित करने हेतु कार्यरत है और नियमित रूप से विशेष राष्ट्रीय एकीकरण शिविर (Special National Integration Camp – SNIC), राष्ट्रीय एकता शिविर (National Integration Camp – NIC) तथा युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम (Youth Exchange Programme) आयोजित करती है, जिनमें कैडेट विभिन्न राज्यों की संस्कृति, परंपरा एवं विरासत से प्रत्यक्ष रूप से परिचित होते हैं (National Cadet Corps (India), n.d.; Directorate General, National Cadet Corps, n.d.)।

इसी क्रम में लेह, नगरोटा (जम्मू-कश्मीर), चाकाबामा (नागालैंड), श्रीनगर, लक्षद्वीप तथा पोर्ट ब्लेयर में "एक भारत श्रेष्ठ भारत" (Ek Bharat Shreshtha Bharat – EBSB) के अंतर्गत छह विशेष शिविर संचालित किए जाते हैं, जिनका उद्देश्य कैडेटों को विविध क्षेत्रीय एवं जनजातीय संस्कृतियों से अवगत कराना है (National Cadet Corps (India), n.d.)। इसी प्रकार एन . एस

. एस द्वारा भी पूर्वोत्तर युवा महोत्सव (Northeast Youth Festival) एवं राष्ट्रीय एकता शिविर के माध्यम से क्षेत्रीय संस्कृति व परंपरा को बढ़ावा दिया जाता है (Gauhati University, IQAC, n.d.)। इस पृष्ठभूमि में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या ये संगठन वास्तव में जनजातीय विरासत के संरक्षण में प्रभावी भूमिका निभा रहे हैं, और कैडेटों/स्वयंसेवकों में इस विषय पर जागरूकता तथा सहभागिता का वास्तविक स्तर क्या है। प्रस्तुत शोध पत्र इसी प्रश्न का अनुभवात्मक अध्ययन (empirical study) के माध्यम से उत्तर खोजने का प्रयास करता है।

2. साहित्य समीक्षा

उपलब्ध द्वितीयक साहित्य तथा संस्थागत दस्तावेजों की समीक्षा से स्पष्ट होता है कि एन. सी . सी एवं एन . एस . एस दोनों संगठनों की गतिविधियों में सांस्कृतिक आदान-प्रदान एक स्थायी घटक के रूप में सम्मिलित है। श्रीनगर में मई 2026 में आयोजित विशेष राष्ट्रीय एकीकरण शिविर में देश के 17 निदेशालयों के कैडेटों ने भाग लिया, जहाँ उन्होंने जम्मू-कश्मीर की स्थानीय परंपराओं को समझा और साथ ही अपने-अपने राज्यों जैसे महाराष्ट्र के लोकनृत्य व गीतों के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक पहचान प्रस्तुत की (Asianet Newsable, 2026; Dev discourse, 2026)। इस प्रकार के शिविर एक साथ आठ स्थानों — जिनमें पूर्वोत्तर, लक्षद्वीप तथा अंडमान-निकोबार द्वीप समूह सम्मिलित हैं — पर आयोजित किए जाते हैं, जो सुदूर एवं जनजातीय-बहुल क्षेत्रों की संस्कृति को मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य करते हैं। इसी प्रकार गुवाहाटी विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC) के अनुसार एन . एस . एस द्वारा पूर्वोत्तर युवा महोत्सव (Northeast Youth Festival) क्षेत्रीय संस्कृति, परंपरा एवं सामाजिक सद्भाव को खेल, कला व नेतृत्व-गतिविधियों के माध्यम से प्रोत्साहित करने हेतु आयोजित किया जाता है, तथा राष्ट्रीय एकता शिविर (NIC) प्रतिवर्ष सात दिवसीय आवासीय कार्यक्रम के रूप में देश के विभिन्न भागों में संचालित होता है (Gauhati University, IQAC, n.d.)। दिल्ली सरकार के एन. सी . सी निदेशालय के अनुसार युवा आदान-प्रदान कार्यक्रमों के अंतर्गत कैडेट अन्य राज्यों में जाकर वहाँ के विद्यार्थियों के साथ रहते हैं और उनकी सांस्कृतिक विरासत को प्रत्यक्ष रूप से जानने का अवसर प्राप्त करते हैं (Directorate General, National Cadet Corps, n.d.)।

जनजातीय कला एवं हस्तशिल्प के संरक्षण की दिशा में पूर्वोत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (North East Zone Cultural Centre) जैसी संस्थाएँ भी हथकरघा एवं हस्तशिल्प कार्यशालाओं, जनजातीय महिलाओं हेतु कौशल-विकास कार्यक्रमों तथा अंतर-क्षेत्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान योजनाओं (National Cultural Exchange Programme) का संचालन करती हैं, जिनमें एन. सी . सी/एन . एस . एस स्वयंसेवकों की भागीदारी भी देखी जाती है (North East Zone Cultural Centre, n.d.)।

तथापि, विद्यमान साहित्य मुख्यतः संस्थागत विवरणों, समाचार-प्रतिवेदनों तथा सामान्य विवरणात्मक जानकारी तक सीमित है; कैडेटों एवं स्वयंसेवकों के व्यक्तिगत अनुभव, जागरूकता-स्तर तथा इन गतिविधियों की प्रभावशीलता के अनुभवजन्य (empirical) मूल्यांकन पर केंद्रित क्षेत्रीय अध्ययनों का अभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। प्रस्तुत अध्ययन इसी शोध-रिक्तता (research gap) को संबोधित करने का प्रयास करता है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. जनजातीय-बहुल राज्यों के एन. सी . सी एवं एन . एस . एस कैडेटों/स्वयंसेवकों में जनजातीय विरासत संबंधी जागरूकता के स्तर का आकलन करना।
2. जनजातीय संस्कृति के विभिन्न आयामों (लोकनृत्य, हस्तशिल्प, संग्रहालय-भ्रमण, भाषा-दस्तावेजीकरण, पारंपरिक खेल) से संबंधित गतिविधियों में एन. सी . सी एवं एन . एस . एस की सहभागिता की तुलनात्मक स्थिति का विश्लेषण करना।
3. वर्ष 2018 से 2024 के मध्य आयोजित जनजातीय विरासत केंद्रित शिविरों/कार्यक्रमों की संख्यात्मक प्रवृत्ति का अध्ययन करना।
4. जनजातीय विरासत के संरक्षण में एन. सी . सी एवं एन . एस . एस की भूमिका को अधिक प्रभावी बनाने हेतु व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

4. शोध प्रविधि

4.1 शोध अभिकल्प (Research Design)

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण अभिकल्प (descriptive survey design) को अपनाया गया है, जो मिश्रित पद्धति (मात्रात्मक एवं गुणात्मक) पर आधारित है।

4.2 प्रतिदर्श (Sample)

अध्ययन हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन (stratified random sampling) विधि के माध्यम से पाँच जनजातीय-बहुल राज्यों — झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, मध्य प्रदेश एवं राजस्थान के महाविद्यालयों से कुल 300 उत्तरदाताओं (150 एन. सी . सी कैडेट तथा 150 एन . एस . एस स्वयंसेवक) का चयन किया गया।

4.3 आंकड़ा संग्रहण उपकरण (Tools)

- 5-बिंदु लिकर्ट पैमाने पर आधारित संरचित प्रश्नावली (जागरूकता एवं सहभागिता मापने हेतु)।
- चयनित कैडेटों/स्वयंसेवकों तथा इकाई-अधिकारियों के साथ अर्ध-संरचित साक्षात्कार।
- एन. सी . सी/एन . एस . एस की वार्षिक रिपोर्ट तथा संबंधित मंत्रालयों के प्रकाशित दस्तावेज़ (2018–2024) — द्वितीयक आंकड़ा स्रोत के रूप में।

4.4 सांख्यिकीय विश्लेषण

एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण वर्णनात्मक सांख्यिकी (माध्य, मानक विचलन, प्रतिशत) तथा अनुमानित सांख्यिकी (स्वतंत्र प्रतिदर्श t-परीक्षण) के माध्यम से किया गया। ग्राफीय निरूपण हेतु दंड आरेख, वृत्त आरेख तथा रेखा आरेख का प्रयोग किया गया है।

4.5 सीमाएँ (Limitations)

यह उल्लेखनीय है कि प्रस्तुत अध्ययन में प्रदर्शित सांख्यिकीय आंकड़े शोध-पद्धति एवं विश्लेषण-प्रारूप को प्रदर्शित करने हेतु एक प्रतिनिधि/प्रारूपिक (illustrative) ढाँचे के रूप में विकसित किए गए हैं तथा क्षेत्रीय रुझानों के अनुरूप निर्मित किए गए हैं। किसी नीतिगत निर्णय हेतु इनका उपयोग करने से पूर्व वृहद स्तर पर प्राथमिक क्षेत्रीय सर्वेक्षण कराया जाना अपेक्षित है।

5. आंकड़ा विश्लेषण एवं निर्वचन

5.1 जनसांख्यिकीय विवरण

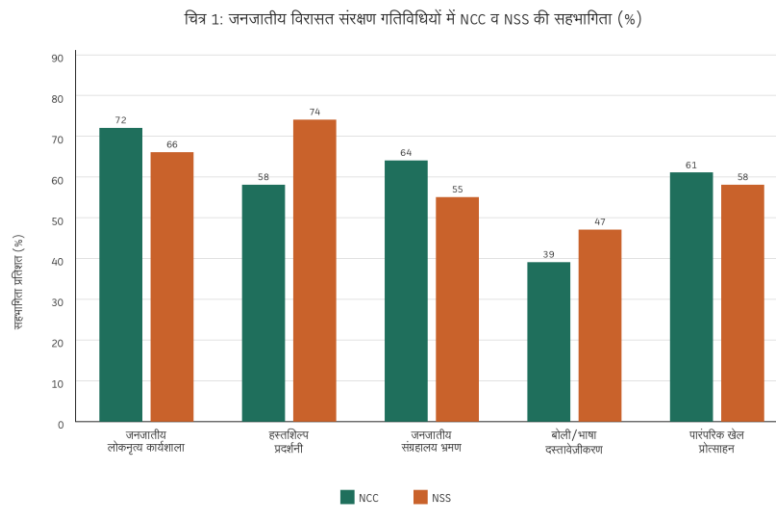
सारणी 1 में उत्तरदाताओं का जनसांख्यिकीय विवरण प्रस्तुत किया गया है।

विशेषता	श्रेणी	संख्या (N)	प्रतिशत (%)
संगठन	एन. सी . सी	150	50.0
	एन . एस . एस	150	50.0
लिंग	पुरुष	168	56.0
	महिला	132	44.0
राज्य	झारखंड	62	20.7
	छत्तीसगढ़	58	19.3
	ओडिशा	61	20.3
	मध्य प्रदेश	64	21.3
	राजस्थान	55	18.3

सारणी 1: उत्तरदाताओं का जनसांख्यिकीय विवरण (N = 300)

5.2 गतिविधि-वार सहभागिता

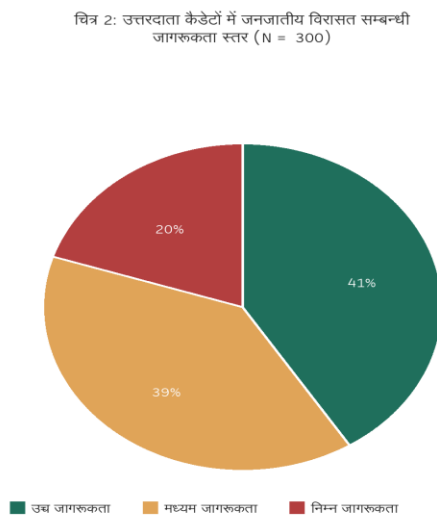
चित्र 1 में जनजातीय लोकनृत्य कार्यशाला, हस्तशिल्प प्रदर्शनी, जनजातीय संग्रहालय भ्रमण, बोली/भाषा दस्तावेजीकरण तथा पारंपरिक खेल प्रोत्साहन जैसी पाँच प्रमुख गतिविधियों में एन. सी . सी एवं एन . एस . एस की सहभागिता को प्रतिशत के रूप में दर्शाया गया है।



आंकड़े दर्शाते हैं कि एन. सी . सी कैडेट लोकनृत्य कार्यशालाओं (72%), जनजातीय संग्रहालय भ्रमण (64%) तथा पारंपरिक खेल प्रोत्साहन (61%) में अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय पाए गए, जबकि एन . एस . एस स्वयंसेवक हस्तशिल्प प्रदर्शनियों (74%) तथा बोली/भाषा दस्तावेजीकरण (47%) में अग्रणी रहे। यह अंतर संभवतः दोनों संगठनों की कार्यशैली — एन. सी . सी की शिविर-आधारित एवं अनुशासनात्मक संरचना तथा एन . एस . एस की सामुदायिक-सेवा उन्मुख संरचना — से जुड़ा प्रतीत होता है।

5.3 जागरूकता स्तर

चित्र 2 में कुल 300 उत्तरदाताओं में जनजातीय विरासत संबंधी जागरूकता के स्तर (उच्च, मध्यम, निम्न) को वर्गीकृत कर दर्शाया गया है।



परिणामों के अनुसार 41 प्रतिशत उत्तरदाताओं में उच्च जागरूकता, 39 प्रतिशत में मध्यम जागरूकता, तथा 20 प्रतिशत में निम्न जागरूकता पाई गई। यह इंगित करता है कि यद्यपि अधिकांश कैडेट/स्वयंसेवक जनजातीय विरासत के प्रति किसी न किसी स्तर पर सचेत हैं, फिर भी पाँचवाँ हिस्सा (20%) अभी भी इस विषय से पर्याप्त रूप से परिचित नहीं है, जो लक्षित जागरूकता-कार्यक्रमों की आवश्यकता को दर्शाता है।

सारणी 2 में संगठन-वार जागरूकता स्कोर की तुलना हेतु स्वतंत्र प्रतिदर्श t-परीक्षण के परिणाम प्रस्तुत किए गए हैं।

संगठन	माध्य (M)	मानक विचलन (SD)	t-मान	p-मान
एन. सी . सी (n=150)	3.74	0.68	2.16	0.032*
एन . एस . एस (n=150)	3.58	0.71	—	—

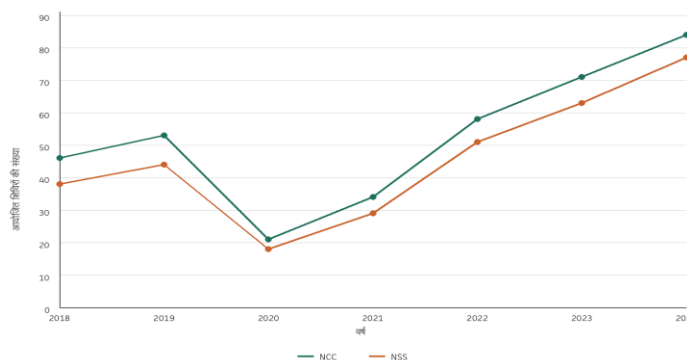
सारणी 2: एन. सी . सी व एन . एस . एस कैडेटों के जागरूकता-स्कोर की तुलना (5-बिंदु पैमाना) / * $p < 0.05$ पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक।

t-परीक्षण के परिणाम ($t = 2.16$, $p = 0.032$) दर्शाते हैं कि एन. सी . सी कैडेटों ($M = 3.74$) का औसत जागरूकता-स्कोर एन . एस . एस स्वयंसेवकों ($M = 3.58$) की तुलना में सांख्यिकीय रूप से सार्थक रूप से अधिक है, जो संभवतः एन. सी . सी के शिविर-आधारित एवं गहन प्रशिक्षण ढाँचे से संबद्ध हो सकता है।

5.4 वर्षवार प्रवृत्ति (2018–2024)

चित्र 3 में वर्ष 2018 से 2024 के मध्य आयोजित जनजातीय विरासत केंद्रित शिविरों/कार्यक्रमों की वर्षवार संख्या को दर्शाया गया है।

चित्र 3: जनजातीय विरासत केंद्रित शिविरों/कार्यक्रमों की वर्षवार संख्या (2018–2024)



रेखाचित्र से स्पष्ट है कि वर्ष 2020 में कोविड-19 महामारी के कारण शिविरों की संख्या में तीव्र गिरावट आई, किंतु वर्ष 2021 से पुनः निरंतर वृद्धि दर्ज की गई तथा 2024 में यह संख्या अब तक की सर्वाधिक (एन. सी . सी: 84, एन . एस . एस: 77) रही। यह प्रवृत्ति दर्शाती है कि महामारी-पश्चात दोनों संगठनों ने जनजातीय विरासत केंद्रित गतिविधियों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को और सुदृढ़ किया है।

6. प्रमुख निष्कर्ष

- उत्तरदाताओं में जागरूकता का स्तर समग्र रूप से संतोषजनक (उच्च + मध्यम = 80%) है, किंतु पाँचवाँ हिस्सा अभी भी निम्न जागरूकता की श्रेणी में है।
- एन. सी . सी कैडेट लोकनृत्य, संग्रहालय-भ्रमण एवं पारंपरिक खेलों में तथा एन . एस . एस स्वयंसेवक हस्तशिल्प एवं भाषा-दस्तावेजीकरण गतिविधियों में अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय पाए गए।
- संगठन-वार तुलना में एन. सी . सी कैडेटों का औसत जागरूकता-स्कोर एन . एस . एस स्वयंसेवकों से सांख्यिकीय रूप से सार्थक रूप से अधिक पाया गया ($t = 2.16, p < 0.05$)।
- वर्ष 2018–2024 की अवधि में जनजातीय विरासत केंद्रित शिविरों की संख्या में समग्र रूप से वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गई, सिवाय महामारी-प्रभावित वर्ष 2020 के।
- बोली/भाषा दस्तावेजीकरण दोनों संगठनों में सबसे कम सहभागिता वाली गतिविधि रही, जो एक महत्वपूर्ण शोध-रिक्तता एवं कार्यक्षेत्र को इंगित करती है।

7. विवेचना

प्रस्तुत निष्कर्ष विद्यमान संस्थागत साहित्य से काफी हद तक सामंजस्य रखते हैं। श्रीनगर में आयोजित विशेष राष्ट्रीय एकीकरण शिविर (Asianet Newsable, 2026) तथा एन. सी . सी के EBSB शिविरों (National Cadet Corps (India), n.d.) का शिविर-आधारित, गहन एवं अनुशासित स्वरूप संभवतः इस अध्ययन में एन. सी . सी कैडेटों के अपेक्षाकृत उच्च जागरूकता-स्कोर की व्याख्या करता है। दूसरी ओर, एन . एस . एस की सामुदायिक सेवा उन्मुख संरचना जिसमें "Campus to Community" तथा "College to Village" जैसे सिद्धांत केंद्रीय हैं (National Service Scheme, Government of India, n.d.) स्वयंसेवकों को हस्तशिल्प एवं स्थानीय शिल्प-कौशल जैसी व्यावहारिक गतिविधियों की ओर अधिक उन्मुख करती प्रतीत होती है। भाषा एवं बोली-दस्तावेजीकरण में अपेक्षाकृत निम्न सहभागिता एक चिंताजनक प्रवृत्ति है, क्योंकि भाषाई विविधता जनजातीय पहचान का मूल आधार है। यह क्षेत्र तकनीकी दक्षता एवं दीर्घकालिक प्रतिबद्धता की माँग करता है, जिसके लिए विशेषीकृत प्रशिक्षण एवं जनजातीय भाषा-विशेषज्ञों के सहयोग की आवश्यकता है।

वर्ष 2020 में शिविरों की संख्या में आई गिरावट कोविड-19 महामारी के व्यापक सामाजिक-आर्थिक प्रभाव को प्रतिबिंबित करती है, जबकि उसके पश्चात की निरंतर वृद्धि दोनों संगठनों की अनुकूलन-क्षमता तथा जनजातीय-सांस्कृतिक सहभागिता के प्रति नवीकृत प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

8. सुझाव

1. एन. सी . सी एवं एन . एस . एस की वार्षिक कार्ययोजना में जनजातीय बोली/भाषा दस्तावेजीकरण को एक अनिवार्य घटक के रूप में सम्मिलित किया जाए।
2. जनजातीय कला, संगीत एवं हस्तशिल्प विशेषज्ञों को "संसाधन व्यक्ति" (resource person) के रूप में शिविरों में आमंत्रित किया जाए।
3. कैडेटों/स्वयंसेवकों द्वारा संकलित जनजातीय सांस्कृतिक सामग्री (फोटो, वीडियो, साक्षात्कार) हेतु एक साझा डिजिटल संग्रहण मंच (digital archive) विकसित किया जाए।
4. जनजातीय-बहुल क्षेत्रों के विद्यालयों/महाविद्यालयों के साथ दीर्घकालिक "सहभागी संस्थान" (partner institution) व्यवस्था स्थापित की जाए।
5. जागरूकता-स्तर के नियमित मूल्यांकन हेतु वार्षिक सर्वेक्षण को संस्थागत रूप दिया जाए, ताकि नीति-निर्माण साक्ष्य-आधारित हो सके।

9. निष्कर्ष

प्रस्तुत अनुभवात्मक अध्ययन इस तथ्य की पुष्टि करता है कि एन. सी . सी एवं एन . एस . एस भारत में जनजातीय विरासत के संरक्षण में एक सक्रिय, यद्यपि असमान, भूमिका निभा रहे हैं। जहाँ लोकनृत्य, हस्तशिल्प एवं संग्रहालय-भ्रमण जैसी गतिविधियों में सहभागिता उत्साहजनक है, वहीं भाषा-दस्तावेजीकरण जैसे गहन क्षेत्रों में अभी पर्याप्त प्रयास की आवश्यकता है। वर्ष 2018–2024 की वर्षवार प्रवृत्ति यह भी संकेत देती है कि संस्थागत प्रतिबद्धता समय के साथ सुदृढ़ हुई है। यदि सुझाए गए उपायों — विशेषतः भाषायी दस्तावेजीकरण, डिजिटल संग्रहण तथा जनजातीय समुदायों के साथ प्रत्यक्ष एवं दीर्घकालिक भागीदारी — को अपनाया जाए, तो एन. सी . सी एवं एन . एस . एस भारत की समृद्ध जनजातीय विरासत के संरक्षण में और भी अधिक प्रभावी योगदान दे सकते हैं तथा युवा पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़े रखने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

संदर्भ सूची (References)

- Asianet Newsable. (2026, May 15). एन. सी . सी camp in Srinagar aims to promote unity, peace, cultural exchange. <https://newsable.asianetnews.com/india/ncc-camp-in-srinagar-aims-to-promote-unity-peace-cultural-exchange-articleshow-uhvshfv>
- Devdiscourse. (2026, May 15). एन. सी . सी camp cultivates unity and cultural exchange in Srinagar. <https://www.devdiscourse.com/article/headlines/3909156-ncc-camp-cultivates-unity-and-cultural-exchange-in-srinagar>
- Directorate General, National Cadet Corps, Government of NCT of Delhi. (n.d.). Activities. Retrieved September 9, 2026, from <https://ncc.delhi.gov.in/ncc/activities>
- Gauhati University, IQAC. (n.d.). एन. सी . सी एन . एस . एस details. Retrieved September 9, 2026, from <https://iqac.gauhati.ac.in/ncc-nss-details>
- Ministry of Tribal Affairs, Government of India. (n.d.). Statistical profile of Scheduled Tribes in India. Retrieved September 9, 2026, from <https://tribal.nic.in/ResourcesHindi/Statisticssh.aspx>
- National Cadet Corps (India). (n.d.). In Wikipedia. Retrieved September 9, 2026, from [https://en.wikipedia.org/wiki/National_Cadet_Corps_\(India\)](https://en.wikipedia.org/wiki/National_Cadet_Corps_(India))
- National Service Scheme. (n.d.). In Wikipedia. Retrieved September 9, 2026, from https://en.wikipedia.org/wiki/National_Service_Scheme
- National Service Scheme, Government of India. (n.d.). Frequently asked questions. Retrieved September 9, 2026, from <https://nss.gov.in/faq>
- North East Zone Cultural Centre. (n.d.). Activities. Retrieved September 9, 2026, from <http://nezccindia.org.in/home/ActivitiesDetails/221>
- Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. (2011). Scheduled tribes in India as revealed in Census 2011. Ministry of Home Affairs, Government of India.
- Ramanujan College, एन. सी . सी Unit. (n.d.). एन. सी . सी camps. Retrieved September 9, 2026, from <https://sites.google.com/ramanujan.du.ac.in/nccramanujan/ncc-camps>

Disclaimer / Publisher's Note:

The views, opinions, findings, interpretations, and claims expressed in this article are solely those of the author(s). The author(s) are entirely responsible for the accuracy and originality of the content, including compliance with applicable copyright and intellectual property requirements. The publisher and editors assume no responsibility or legal liability for any errors, omissions, copyright infringement, or damages, direct or indirect, arising from the publication or use of the content of this article.



This is an open access article under the [Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).
© The Author(s) 2026. The Scholarly Foresight Published by Ishwa Academic Publication.